[श्री रामदास अग्रवाल]

से कम इन बातों पर निर्णय करें कि राष्ट्र-हित में जो बातें हैं, उनके बारे में हम सब मिलकर एक मत बनाकर, इस देश को आगे ले जाने का संकल्प व्यक्त करें। मुझे विश्वास है कि हमारे सदन के सभी माननीय सदस्य इस बात को अच्छी तरह से जानते, मानते और पहचानते हैं कि देश का उत्थान और देश का निर्माण लोकतांत्रिक व्यवस्था, संस्था के माध्यम से होना ही है, इसलिए इसकी गरिमा, इसकी प्रतिष्ठा और इसका सम्मान सभी प्रकार से हम सुरक्षित रखेंगे, हमने इसे रखा है और आगे भी रखेंगे, ऐसी मेरी भावना और ऐसा मेरा सबसे निवेदन है।

उपसभापति महोदय, अंत में, मैं यह बात कहना चाहता हूं कि इस देश के अंदर जो लोकतांत्रिक व्यवस्था का ढांचा बना हुआ है, इसको सम्पुष्ट करने के लिए हम सब चाहे यहां रहें या न रहें, बाहर रहकर भी हम देश की और समाज की सेवा करते रहेंगे, पहले भी करते रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे। आप सब का आशीर्वाद मुझ जैसे व्यक्ति को मिलेगा, तो मैं आगे भी अपने देश और समाज की सेवा करने में तत्पर रहूंगा। इन्हीं शब्दों के साथ, आपने मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूं।

FAREWELL TO THE DEPUTY CHAIRMAN

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Hon. Members, I am laying down my office as Deputy Chairman of Rajya Sabha on 2nd of April. I would like to express my sincere thanks to all the Members of this House who have cooperated with me during the last eight years.

SHRI S.S. AHLUWALIA (Jharkhand) : Sir, also thank those who have not cooperated.

MR. DEPUTY CHAIRMAN : All of you have cooperated, without any exception. You have given me love and respect. Sometimes the Chair has some compulsions and it has to work in a very constrained manner. In such times, I probably might not have given an opportunity to some of the Members. But it has never been my intention to deprive the Members of their right to express their opinion. Because of time management, sometimes the Chair has such constraints. I will apologies if anybody is hurt by my decisions or my rulings. I also thank the leaders of all the political parties, the Leader of the House, our respected Prime Minister, Dr. Manmohan Singh, the Leader of the Opposition and the floor leaders of all the political parties. I thank my party leadership who has given me the opportunity to preside over this House for over eight years. I thank the Secretary-General who has extended full cooperation in the functioning, the Secretary and other staff of the Table Office, Marshals, House Attendants, all staff of Rajya Sabha Secretariat and various Parliamentary functionaries. I once again thank you for all the cooperation.

SHRI SATISH CHANDRA MISRA (Uttar Pradesh) : Sir, on behalf of my party— and I think all the Members will associate—I would say that during the last eight years, it has been my experience in this House that we have never found you discriminatory in any manner. We have always seen you smiling. Not only have we seen here, but the whole country, as soon as they see you sitting here, they know that

now the atmosphere would change, even if there is tense atmosphere, because you are on the seat. We have never found that you have made any partiality with anyone and whenever required, you always helped us. We pray that these eight years continue again.

श्री एस.एस. अहलुवालिया : महोदय, आपकी विदाई की इस बेला में मैं प्रतिपक्ष की तरफ से इतना ही कहूंगा कि मैं तो यहां नहीं रहूंगा, लेकिन आपका यह मुस्कराता हुआ चेहरा, केवल आपके चेहरे से ही परिलक्षित नहीं होता, आपकी आंखों के माध्यम से होता है, आपकी भाषा के माध्यम से होता है और आपके अनुशासन के माध्यम से होता है, मैं विशेषकर इसको मिस करूंगा। मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि यह मुस्कराता हुआ चेहरा अपने राजनीतिक जीवन में और ऊंचाइयों को छुए तथा आप और ऊंचे जाएं, आप इस मुस्कराहट को और लोगों के साथ बांटें। यह खुशबू सिर्फ अपने पास रखने की नहीं है, यह दूसरों को बांटने पर और बढ़ेगी। आप इस पद पर भी विराजमान हों और सदन की कार्यवाही चलाएं।

श्री बलबीर पुंज (ओडिशा) : सर, जब आप मुस्कराते हैं तब तो बड़े natural लगते हैं, परन्तु जब आप गुस्सा करने की कोशिश करते हैं, तो लगता है कि unnatural है और एक्टिंग कर रहे हैं। The anger on your face does not look genuine. But your smile is genuine. In the eight years, you have steered the House through most difficult situations, क्योंकि चेयरमैन साहब तो क्वेश्चन ऑवर में होते हैं which is comparatively much easier. But you were there during the most difficult situations. We give you credit for this and we salute you.

SHRI SHANTARAM NAIK (Goa) : Sir, on behalf of the Congress Party, I extend you all the best wishes. I am happy that from the bench closer to Ahluwaliaji, you will be coming to this side.

श्री तरुण विजय (उत्तराखंड) : सर, मैंने आप से एक बात सीखी है कि *विद्या ददाति विनियम।* जिसके पास विद्या है, जिसमें बड़प्पन है, वह बड़ा विनयी होता है, उसमें बड़प्पन का अहंकार नहीं होता है। वह सबको साथ लेकर चलने का प्रयास करता है और किसी भी स्थिति में वह बहुत अधिक क्रोधित नहीं होता है। जब हम आज की परिस्थिति में देखते हैं कि अपने ही अपनों की पीठ में खंजर घोंपते हैं, ऐसी स्थिति में आपने विभिन्न विचारों की पार्टियों को साथ लेकर एक ऐसा नेतृत्व दिया, जिस पर हमें गर्व है और हम हमेशा आपको याद रखेंगे।

SHRI SUKHENDU SEKHAR ROY (West Bengal): Sir, I, on behalf of my party, extend gratitude for running the House the way you run from time to time. You have been an excellent Presiding Officer, although my experience is of only eight months, आप जैसे विद्वान और लेखक को हम temporarily miss करेंगे, यह हमारी उम्मीद है। हेमा मालिनी जी भी आज रिटायर हो रही हैं। वे कई साल पहले number one artist थीं। वे आज भी हमारे मन के अंदर number one artist ही हैं। हमने जिस 'dream girl' को देखा था, हमारे मन में आज भी उस 'dream girl' की छवि है। सुरेन्द्र सिंह अहलुवालिया जी जिस तरह से रिटायरिंग मेम्बर्स को tribute दे रहे थे, मुझे उनकी यह अदा अनोखी लगी। हमारे साथी अग्रवाल साहब was telling us that he has completed 75 years. But he must not retire from politics and social life. He is an excellent person. We have always seen him smiling.

With these words, Sir, I wish you all the best.

MR. DEPUTY CHAIRMAN : It is difficult. It is embarrassing for me.

1.00 P.M.

श्री राम कृपाल यादव (बिहार) : सर, मैं अपनी पार्टी की तरफ से और अपनी तरफ से आपके प्रति आभार व्यक्त करता हूं। जब आप स्टैंडिंग कमेटी के चेयरमैन थे, तब मुझे आपके साथ एक सदस्य के रूप में काम करने का सौभाग्य मिला था। सर, मैं आपको, आपके व्यवहार को और आपके स्वभाव को बहुत पहले से जानता हूं। सर, मैं आपके काम करने की क्षमता, as a Standing Committee Chairman, को अच्छी तरह से जानता हूं। आप इस सदन में लगभग 8 साल से काम कर रहे हैं, मैं इससे भी अच्छी तरह से वाकिफ हूं। मुझे पिछले दो सालों से आपको इस सदन में करीब से जानने का सौभाग्य भी मिला है। सर, आप जैसे दिखते हैं, जैसा कि माननीय सदस्यों ने कहा, निश्चित तौर पर उससे कहीं ज्यादा अच्छे हैं। मैं आपके लिए दुआ करता हूं कि आपकी आयु लंबी हो और आपने जिस कार्यक्षमता के साथ, सभी लोगों को साथ लेकर इस हाउस को चलाने का काम किया है, अल्लाह करे कि आप और ऊंचे पद पर जाएं और इसी तरह से, जैसाकि अहलुवालिया साहब ने कहा कि आपने मुस्कराते हुए, सदन के माध्यम से देश और दुनिया पर अपनी एक छाप छोड़ने का काम किया है, आप ऐसे ही आगे भी अपनी छाप छोड़ते रहने के काम करें। आपके लिए मेरी पूरी शुभकामनाएं हैं।

इसके साथ ही साथ अहलुवालिया साहब के प्रति, आदरणीय अग्रवाल साहब के प्रति, मैडम हेमा जी के प्रति, जो आज रिटायर हो रही हैं, इन सभी के प्रति मेरी बहुत शुभकामनाएं हैं। मैं अहलुवालिया साहब को पिछले तीस सालों से जानता हूं। ये हमारे बिहार, पटना के निवासी हैं, इसलिए मैं उनको विशेष तौर पर जानता हूं। मैं समझता हूं कि इन तीनों लोगों की कमी सदन में महसूस होगी। मेरी इन लोगों के लिए भी शुभकामना है कि ये जिस तरह से देश की सेवा में अपना योगदान देते रहे हैं, उसी तरह से, आगे भी, आने वाले वक्त में योगदान देते रहने का काम करें। मैं इन सभी लोगों को शुभकामनाएं और बधाई देने के साथ अपनी बात समाप्त करता हूं। उपसभापति जी धन्यवाद।

DR. BARUN MUKHERJI (West Bengal) : Sir, I join the House in expressing our heartiest thanks and gratitude to you. I sincerely wish that you will come back to your place, to your Chair, and guide the House for pretty more long years with all the efficiency as you have done before. Thank you very much.

SHRIMATI VASANTHI STANLEY (Tamil Nadu) : Sir, I am not as experienced as others, being the lady Member. But, still, on behalf of our Party and myself and my association with you for the past four years, I thank you. Sometimes, when you are in the Chair and my chance comes to speak, maybe, we are afraid of your strictness of adhering to time. But, that is the way you have to handle the challenging timings and other things. Other than that, we have never seen you being partial to anybody. You are always encouraging. Sir, on behalf of our Party and myself, I wish you all the good health, good luck and I wish that you will come back here to guide us and be the guiding spirit. Thank you once again.

श्री रवि शंकर प्रसाद (बिहार) : उपसभापति जी, मैं आपसे बहुत विनम्रता के साथ एक बात कहना चाहता हूं कि आज आपने अपनी विदाई की बात कहकर जिस तरीके के उद्गार प्रकट किए हैं, उसमें आपका बड़प्पन झलका है। मैं इतना ही कहूंगा कि अगर हम लोगों के किसी आचरण से आपको दु:ख पहुँचा है, तो मैं उसके लिए, हम सब की तरफ से आपसे माफी मांगता हूं। मैं आपसे जो एक बड़ी बात कहना चाहूंगा, वह यह है कि आज हाउस ने जिस सर्वानुमति से अपने उद्गार प्रकट किए हैं, उससे शायद बाहर यह संदेश गया है कि संसद जब गरिमा के अनुसार ऊपर

उठती है, तब संसद की ऊंचाई क्या होती है। आज पूरे देश को उस ऊंचाई का एक बहुत ही सार्थक संदेश गया है, जो हम सभी ने देखा है। शायद आज के दिन संसद ने उस ऊंचाई को प्राप्त किया है, जिसके लिए सभी मित्रों का अभिनंदन है। हम आपको अपनी शुभकामनाएं देंगे और एक विनम्र आग्रह भी करेंगे कि आपने इस पद पर रहते हुए, जिस प्रकार से पिछले आठ वर्षों से हाउस को चलाया है, जिसे मैंने स्वयं देखा है, शायद अभी आपके बिना इस उपसभापति पद की कल्पना नहीं की जाएगी। आपके लिए मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं। धन्यवाद।

सुश्री अनुसूइया उइके (मध्य प्रदेश) : उपसभापति महोदय, सबसे पहले तो मैं आपके प्रति आभार व्यक्त करती हूं, क्योंकि आज मेरा भी यहाँ आखिरी दिन है। मैं आपके लिए यह कहना चाहती हूं कि आप हंसते रहें, मुस्कराते रहें। मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि आप सदा इसी तरह मुस्कराते रहें। मैं इसके साथ ही एक और बात कहूंगी कि अपने इन छह सालों के दौरान की कुछ यादें हम आपके बीच से लेकर जाएंगे। मैं इसके लिए दो पंक्तियाँ कहना चाहती हूं,

कुछ यादें उदास बना देती हैं,
कुछ यादें परिहास बना देती हैं।
कुछ यादें यदि रह जाती हैं,
तो यही यादें इक दिन इतिहास बना देती हैं।

उपसभापति जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI SHASHI BHUSAN BEHERA (Odisha) : Sir, I express my gratitude and join the feelings of other Members of this House. Sir, the way you conduct the House has a lasting impression for this House. Sir, we can't forget your smile. Thank you.

श्री रामदास अग्रवाल (राजस्थान) : उपसभापति महोदय, आप इस चेयर पर बैठ कर जो role play करते हैं, वह तो हम सब आए दिन देखते हैं और हम सब उससे, आपसे और आपकी मुस्कान से कितने प्रभावित हैं, यह सबने व्यक्त किया, लेकिन मैं एक बात कहना चाहता हूँ, जो मैंने एक बार आपको वहाँ से नहीं, यहाँ से सुना था। मैंने आपको एक ही बार सुना, इसके बाद मुझे अवसर नहीं मिला, लेकिन आपका माइनॉरिटी से सम्बन्धित विषय पर भाषण था। उपसभापति महोदय, मैं कहना चाहता हूँ कि मैंने ऐसा संतुलित भाषण और ऐसा ज्ञान देने वाला, सारगर्भित भाषण, ऐसे complicated issue पर, नहीं सुना। मैं यह बात इसलिए कहना चाहता हूँ कि अल्पसंख्यक वर्गों के बारे में भाषण देने वाले लोग बाहर न जाने क्या-क्या बोलते हैं, लेकिन आप स्वयं इस जगह बैठ कर, जिस प्रकार से आपने अभिव्यक्ति की, वह अभिव्यक्ति ऐतिहासिक थी। मैं उस भाषण को हमेशा अपने दिल में याद रखता हूँ कि एक व्यक्ति है, जो constructive बात करता है, रचनात्मक सुझाव देता है और रचनात्मक ढंग से इन समस्याओं के समाधान के लिए प्रयास करता है। इसलिए, उपसभापति महोदय, आपका वह भाषण, जो यहाँ हुआ था, मेरे दिल में और अन्य सांसदों के मन में भी शायद याद आया होगा, वास्तव में बड़ा सारगर्भित था। मैं आपको बधाई देता हूँ और कामना करता हूँ कि आप जहाँ रहेंगे, वहाँ इस देश के और इन सारे समाज के लोगों को मिला कर काम करने के लिए, इस देश की उन्नति में अपना सहयोग देंगे। इन्हीं भावनाओं के साथ आपको बहुत-बहुत शुभकामना। धन्यवाद।

श्री नंद कुमार साय (छत्तीसगढ़) : माननीय उपसभापति महोदय, आज आपने अपनी विदाई की बात कही। यह विदाई बड़ा कठिन क्षण होता है। वैसे तो हम लोग अलग-अलग जगहों से, देश के दूर-दूर, अलग-अलग भागों से आते हैं। एक परिवार जैसा यहाँ वातावरण बनता है। भारतीय चिंतन में तो हमने कहा है कि सम्पूर्ण विश्व हमारा परिवार है। हालाँकि मैं बहुत ज्यादा उपस्थिति नहीं दे पाया, लेकिन मैंने देखा कि जब-जब कठिन समय में आप हाउस में प्रवेश करते थे, तो लगता था कि अब समाधान का समय आ गया है। हमें ऐसी अनुभूति होती थी। आपके चेहरे के सम्बन्ध में तो सभी लोगों ने कहा। हमने आपको कभी नाराज होते नहीं देखा। कभी नहीं देखा, कठिन स्थिति में भी। यह आना-जाना तो संसार की नियति है, प्रकृति है। आपसे फिर हमारी मुलाकात होगी, आप मिलते रहेंगे। आप यहाँ दोबारा आएँगे, सब

[श्री नंद कुमार साय]

लोगों ने ऐसी कल्पना की है। यह आने-जाने का क्रम तो जीवन का क्रम है। अंत में आपकी विदाई में मैं सुमित्रा नंदन पंत की इन पंक्तियों को पढ़ता हूँ :

यह साँझ-उषा का आँगन, आलिंगन विरह-मिलन का
चिर हास-अश्रुमय आनन रे, इस मानव जीवन का।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

THE MINISTER OF LAW AND JUSTICE AND THE MINISTER OF MINORITY AFFAIRS (SHRI SALMAN KHURSHEED) : Mr. Deputy Chairman, may I say a word on behalf of the Government?

I am greatly honoured to have had you not only as a friend, philosopher and guide but someone who has earned so much respect from the entire House. I think it is a great day for our Parliament. It is a great day for our democracy. I only want to say that we cherish the values, the wisdom with which you have guided the House. We want to place it on record. There is a famous song in the movie to Oliver Twist. Faquir sings to the boys, "You can go, but be back soon." I think it applies very well to you. You can go, but be back soon. My prayers are :

लब पे आती है दुआ, बन के तमन्ना मेरी,
जिन्दगी शमा की सूरत हो खुदाया तेरी।

Thank you Sir.

SHRI K.N. BALAGOPAL (Kerala) : Mr. Deputy Chairman, Sir, we have to say thank you; otherwise it is a disrespect. Like I always said to the Chair, I think, now also you are trying to deny me a chance. But jokingly I am saying. You were very helpful Presiding Officer for all of us. We are just completing two years in this House. The very first day onwards, we felt that your support was always very, very helpful. You were like a strict Headmaster but always smiling which helped us not to fear you. At the same time, you were very supportive. We felt that you were impartial. Here every one belongs to some political party. But you behaved as an impartial Presiding Officer and that is a good experience for all of us. So, on behalf of all of us and on behalf of my party, I am expressing our sincere thanks and gratitude to you.

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Hon. Members, I am moved with your sentiments. I will carry this sweet memory and the sentiments, respect and love that you have showered on me. I remember the day when I was elected for the second time. The entire House and all the 18 or 19 political parties supported my nomination. That is a great honour which you have given to me and that has given me the strength to conduct the house. I, once again, thank all of you for the sentiments which you have expressed.

The House is adjourned till 2.30 p.m.

The House then adjourned for lunch at eleven minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at thirty eight minutes past two of the clock

SECRETARY-GENERAL : Hon. Members, since there is no quorum in the House, the Vice-Chairman, Prof. P.J. Kurien, has directed that the House may be adjourned till 11.00 A.M. on Tuesday, the 24th April, 2012.

The House then adjourned at thirty-eight minutes past two of the clock till eleven of the clock on Tuesday, the 24th April, 2012.